सार्क में भारत की भूमिका का विश्लेषणात्मक मूल्यांकनः–

सुरेन्द्र कुमार
सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग,
राजकीय महिला महाविद्यालय, बवानी खेड़ा,
भिवानी।

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र में सार्क में भारत की भूमिका का विश्लेषण किया गया है। इसमें सार्क का संक्षिप्त परिचय बताते हुए भारत के लिए सार्क के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। शोध पत्र में सार्क देशों के साथ भाररत के संबंधों का भी वर्णन किया गया है। इस शोध पत्र में सार्क को सशक्त करने में भारत की भूमिका का निष्पक्ष मूल्यांकन किया गया है अंत में निष्कर्ष स्वरूप दक्षिण एशियाई क्षेत्र में भविष्य की संभावनाओं एवं चुनौतियों पर भी विचार किया गया है।

मुख्य शब्दः–

सार्क, बहुक्षेत्रीय, दक्षिण एशियाई, गुजराल सिद्धांत, पडोस नीति, सहयोग विदेश नीति।

भूमिकाः– सार्क (South asean association for Regional Cooperation)

जिसे दक्षेस के नाम से भी जाना जाता है। दक्षिण एशियाई देशों का एक बहुक्षेत्रीय सहयोग संगठन है। इसकी स्थापना बांग्लादेश के पूर्व राष्ट्रपति जिया–उर–रहमान की पहल पर 8 दिसम्बर 1985 को बांग्लादेश की राजधानी ढाका में हुई। सार्क में आठ देश शामिल है जो इस प्रकार है– 1 भारत 2 पाकिस्तान 3 बांग्लादेश 4 नेपाल 5 भूटान 6 मालदीव 7 अफगानिस्तान 8 श्रीलंका।

- अफगानिस्तान 2007 में सार्क का अंतिम एवं आठवां सदस्य बना।
- सार्क में आठ सदस्य राष्ट्रों के अतिरिक्त नौ पर्यवेक्षक राष्ट्र भी शामिल है।
- सार्क का सचिवालय 1987 में नेपाल की राजधानी काठमांडू में स्थापित किया गया।

भारत के लिए सार्क का महत्व–

सार्क में शामिल सभी सदस्य राष्ट्र भारत के सीमावर्ती देश है। यदि भारत को अपने आर्थिक एवं राजनीतिक विकास को बढ़ावा देना है तो एक शांतिपूर्ण पडोस का होना पहली आवश्यकता है। सार्क के

माध्यम से भारत अपने पड़ोसी देशों के साथ सहयोगात्मक संबंधों का विकास कर सकता है। सार्क के देशों के साथ संबंधों को घनिष्ठ बनाकर भारत, चीन के बढ़ते प्रभाव को प्रतिसंतुलित कर सकता है।

भारत आज एक विश्वशक्ति बनने की ओर तेजी से अग्रसर है। यदि भारत को इस लक्ष्य में सफलता प्राप्त करनी है तो सार्क देशों का इसमें बड़ा योगदान हो सकता है अतः सार्क भारत के लिए रणनीतिक, सांस्कृतिक आर्थिक एवं राजनीतिक सभी दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है।

सार्क देशों के साथ भारत के साथ संबंध

सार्क के सदस्य राष्ट्रों के साथ भारत के संबंध मिश्रित प्रकार के हैं कुछ राष्ट्रो के साथ मित्रतापूर्ण तो किसी के साथ तनावपूर्ण संबंध देखे जा सकते हैं यदपि सार्क के सभी राष्ट्र भारत के पडोसी राष्ट्र है और पडोसियों के प्रति भारत ने स्वतंत्रता के समय से ही सहयोगपूर्ण संबंधों पर बल दिया है। वैश्वीकरण के इस युग में भारत ने यह स्वीकार किया है कि पडोसी राष्ट्रों के साथ पारस्परिक लाभकारी संबंधों से ही साझा विकास संभव है। इसी को ध्यान में रखते हुए 1996 में तत्कालीन विदेश मंत्री इंद्र कुमार गुजराल ने विदेश नीति के संचालन हेतु गुजराल सिद्धांत दिया। गुजराल सिद्धांत में भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंधों के संचालन के कुछ नियम बताए गए थे।

सार्क देशों के बीच व्यापार को निम्न ग्राफ से समझा जा सकता है।

सारणी : उच्चस्तरीय द्विपक्षीय यात्राएं[59]

	2014-2015	2015-2016	2016-2017	2017-2018
Afghanistan		December 2015: PM Modi visits Kabul	June 2016: PM Modi visits Heart to inaugurate India-Afghanistan Friendship Dam December 2016: PM visits Kabul to inaugurate Afghan parliament	September 2017: CEO Abdullah visits New Delhi October 2017: President Ghari visits New Delhi
Bangladesh	June 2014: External Affairs Minister Sushma Swaraj visits Dhaka	June 2015: Modi visits Dhaka to ratify Land boundary Agreement August 2015: PM Hasina visits New Delhi	October 2016: PM Hasina visits Goa for BRICS-BIMSTEC summit	April 2017: PM Hasina visits New Delhi May 2018: PM Hasina visits West Bengal
Bhutan	June 2014: PM Modi visits Thimpu, addresses Parliament October 2014: King and Queen visit India November 2014: President Pranab Mukherjee visits Bhutan			October 2017: King and Queen visit New Delhi July 2018: PM Tobgay visits New Delhi August 2018: King visits New Delhi for Vajpayee tuneral
Nepal	August 2014: PM Modi visits Nepal November 2014: Modi attends SAARC summit in Kathmandu		February 2016: PM Modi Oli visits New Delhi September: PM PK Dahal visit India October 2016: PM Dahal visit Goa to attend BRICS-BIMSTEC summit	August 2017: PM Sher Bahadur Deuba visits India April 2018: PM Oli visits New Delhi May 2018: Modi visits Nepal August: Modi visits Nepal for BIMSTEC summit
Maldives	Nobember 2014: EAM Swaraj vists	October 2015: EAM Swaraj visits		December 2018: PM Solih visit New Delhi
Pakistan		July 2015: Both PM met on sidelines of SCO summit in UFA November 2015: PM meet on sidelines of COP21 in Paris December 2015: PM Modi stops in Lahore		
Sri Lanka		February 2015: President Sirisena visits New Delhi March 2015: Modi visits Sri Lanka September 2015: PM Wickremesinghe visits New Delhi	October 2016: President Sirisena visits Goa for BRICS-BIMSTEC summit November 2016: Sirisena travels to New Delhi to attend COPS7.	May 2017: PM visits Sri Lanka for Vesak Day

भारत को चीन के बढ़ते प्रभाव की संतुलित करने के लिए तथा शांतिपूर्ण परिवेश का निर्माण करने के लिए सार्क सदस्यों के साथ संबंधों की ओर अधिक मजबूत करने की कोशिश जारी रखनी होगी।

इसके पश्चात 2014 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'पड़ोसी पहले' की नीति को घोषित किया तथा दक्षिण एशिया के देशों के साथ संबंधों पर प्रमुखता से बल दिया।

भारत व सार्क सदस्यों के बीच द्विपक्षीय एवं बहुपक्षीय सहयोग अब तक उतना घनिष्ठ नहीं हुआ है जितना आवश्यक है किंतु 2014 के बाद से इसमें सकारात्मक परिवर्तन देखा गया है। निम्न ग्राफ के माध्यम से हम इसे समझ सकते हैं।

ग्राफ : भारत और दक्षिण एशियाई देशों के बीच कुल व्यापार

(कीमत, मिलियन डॉलर में)[58]

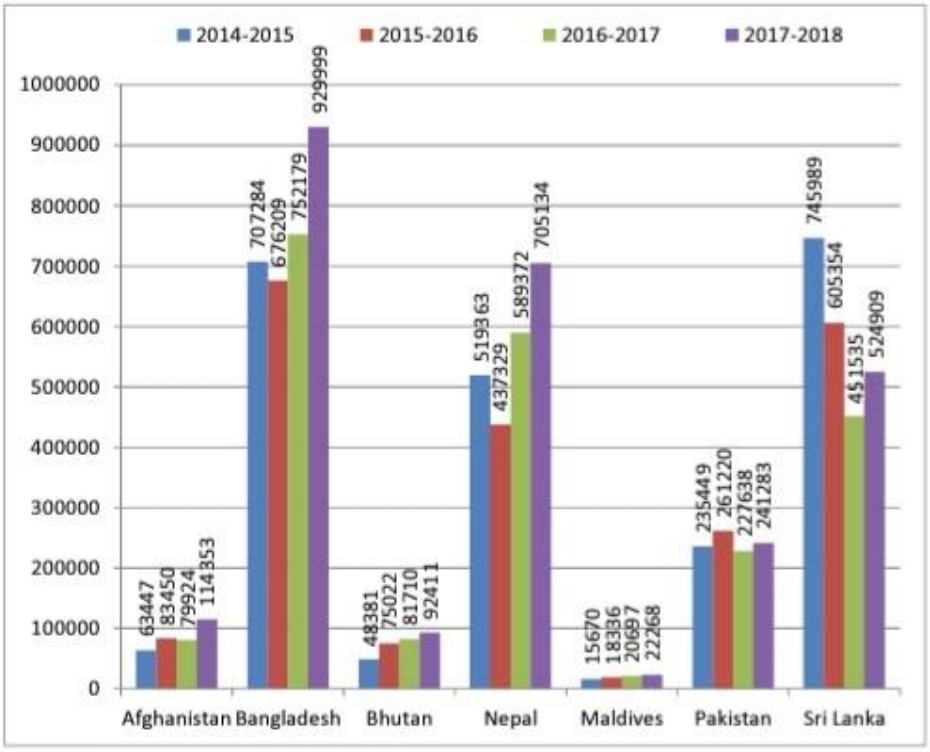

स्रोत– एक्सपोर्ट इंपोर्ट डेटा बैंक, वाणिज्य विभाग, नई दिल्ली

भारत को दक्षिण एशियाई देशों के साथ व्यापारिक व आर्थिक संबंधों की मजबूती पर भी बल देना होगा सार्क की स्थापना के पश्चात भी सार्क देशों के बीच व्यापारिक संबंध आशाजनक नहीं रहे है विश्व बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार दक्षिण एशिया विश्व में आर्थिक दृष्टि सबसे कम एकीकृत क्षेत्र है इसे भी युरोपीय संघ व आसियान की तरह प्रयास करने होंगे।

सार्क में भारत की भूमिका का मूल्यांकन

दक्षिण एशियाई सहयोग संगठन में भारत की भूमिका महत्वपूर्ण है। सार्क की स्थापना के समय से लेकर वर्तमान तक भारत ने इसमें सहयोग विकसित करने हेतु तत्परता दिखाई है। भारत ने अपनी विदेशनीति को भी इस प्रकार निर्मित किया है जिससे पड़ोसी देशों के साथ सहयोग मजबूत हो। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत के पंडित नेहरू ने विश्व बंधुत्व की भावना से प्रेरित हो एशिया सहयोग संघ का नारा दिया। सार्क की स्थापना का विचार निःसंदेह बांग्लादेश के तत्कालीन राष्ट्रपति ने दिया था किंतु इसको वास्तविक रूप देने में भारत की पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी का अहम योगदान रहा। भारत ने सार्क के सभी सम्मेलनों ने अपने व्यापक सुझाव व योजनाए रखी है जिससे सार्क में बहुक्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा मिला।

भारत ने सार्क में एक जिम्मेदार सदस्य व बड़े भाई की भूमिका निभाई है। सार्क को प्राप्त वितीय सहायता में भारत 32 प्रतिशत का भागीदार है सार्क के सदस्य देशों की भारत के प्रति आशंका व अविश्वास जैसी दुराग्रहपूर्ण धारणाओं को दूर करने हेतु सहयोग प्रक्रिया में भारत ने अपने सभी दायित्वों का निर्वहन किया है।

हाल ही में संपन्न हुए सार्क के 18वें शिखर सम्मेलन में भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सार्क की कमजोरियों की ओर सबका ध्यान खींचा। साथ ही उन्होंने सार्क देशों के बीच मुक्त व्यापार रेल–सड़क मार्ग कनेक्टिविटी, निवेश, सरंचनात्मक ढांचे के विकास जैसे मुददों पर जोर दिया। उल्लेखनीय है कि भारत के प्रयासों से ही 2006 में साफटा (सार्क मुक्त व्यापार समझौता लागू हुआ था।

भारत ने सार्क के शिखर सम्मेलनों मं आतंकवाद जैसे मुददें पर भी सबका ध्यान आकर्षित किया है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सार्क की स्थापना, संगठन के विकास एवं लक्ष्यों की प्राप्ति में भारत ने सकारात्मक भूमिका निभाई है।

भारतीय नेतृत्व ने क्षेत्रीय सकारात्मक संगठन के सदस्य देशों की समस्या के निस्तारण का प्रयास किया है, साथ ही आपसी भाई–चारे, मेल–मिलाप के आधार पर समस्याओं को सुलझाया है। भारत ने सम्मेलन के सुझावों को अमली जामा पहनाते हुए गरीबी, बेरोजगारी, स्वास्थ्य, शिक्षा, पेयजल, परिवहन, व्यापार व अन्य क्षेत्रों के लिए संसाधन उपलब्ध करवाया ळें

संदर्भ ग्रन्थः–

1. आर एस यादव, ट्रैडज इन दि स्टडीज ऑन इण्डियाज फॉरेन पॉलिसी, इंटरनेश्नल स्टडीज वाल्यूम 30, अंक 1 जनवरी–मार्च 1993।
2. जे बधोपाध्याय, दि मेकिंग ऑफ इण्डियाज फॉरेन पॉलिसी, नई दिल्ली, 1979।
3. एम. सी. गुप्ता इण्डियन फॉरेन पॉलिसी, थ्योरी एण्ड प्रैक्टिस।
4. वी. पी. दत्त, इण्डियाज फॉरेन पॉलिसी, नई दिल्ली, 1989।
5. तपन बिस्वाल, अंतर्राष्ट्रीय संबंध मैकमिलन पब्लिशर्स।